



21942 - यह हदीस कि "इस्लाम में सैर सपाटा नहीं है" सहीह नहीं है।

प्रश्न

यह हदीस कि "इस्लाम में सियाहत (यानी सैर सपाटा) नहीं है" कहाँ तक सहीह है ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

हर प्रकार की प्रशंसा और स्तुति केवल अल्लाह के लिए योग्य है।

एक हदीस में आया है, जिसे अब्दुर्रज़ाक ने अपने मुसन्नफ में लैस से और उन्होंने ने ताऊस से रिवायत किया है कि उन्होंने ने कहा कि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "...इस्लाम में न तो सैर सपाटा है, न ब्रह्मचर्य है और न ही रहबानियत है।" अल्बानी ने ज़ईफल जामे हदीस संख्या : 6287 के अंतर्गत फरमाया है कि यह हदीस ज़ईफ़ है।

बल्कि सही वह हदीस है जिसे अबू दाऊद ने अपनी सुनन में अबू उमामा की हदीस से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "मेरी उम्मत की सियाहत (सैर सपाटा) अल्लाह के रास्ते में जिहाद है।" इसे अल्बानी ने सहीहुल जामे हदीस संख्या : 2093 के तहत सहीह कहा है।

तथा अल्लाह तआला के फरमान :

5 : [التحریم : مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ فَانْتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا]

"वे (महिलाएँ) मुसलमान, ईमानवाल्याँ, आज्ञापालन करनेवाल्याँ, तौबा करनेवाल्याँ, इबादत करनेवाल्याँ, रोज़े रखनेवाल्याँ, सैयिबा (शादीशुदा औरत जिसका पति न हो) और कुँवारियाँ होंगी।" (सूरतुत्तह्मीम : 5).

में "साईहात" का अर्थ रोज़ेदार महिलाएँ हैं। तो शरीअत के नुसूस (ग्रंथों) में "सियाहत" का शब्द जिहाद के अर्थ में और रोज़े के अर्थ में आया है। और अल्लाह तआला ही अधिक ज्ञान रखता है।

इस्लाम प्रश्न और उत्तर